कोर्स 7 - प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण

1

कोर्स के मुख्य उद्देश्य

- शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की घर की भाषा को शामिल करने के महत्व को समझना
- बहुभाषी शिक्षण के बारे में बेहतर समझ और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना
- कक्षा में बहुभाषी शिक्षण को लागू करने की कुछ रणनीतियों को समझ पाना

2

भाषा: सीखने का माध्यम

भाषा सीखने की सभी प्रक्रियाओं में मदद करती है ।

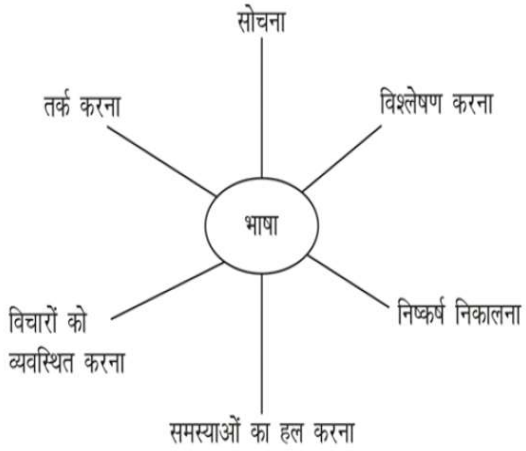

जब बच्चे भाषा सीखते हैं तो वे बहुत सारे विकल्पों में से सिर्फ़ एक चीज़ नहीं सीख रहे होते हैं ; बल्कि वे सीखने की आधारशिला सीख रहे होते हैं।

- (हैलिडे , 1993)

3

वर्तमान संदर्भ (नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)

कक्षा में बच्चों की परिचित भाषा(ओं) का इस्तेमाल करना सीखने के लिए महत्वपूर्ण है।

- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भाषाओं और स्कूल की भाषा के बीच की दूरी को कम करने के पूरे प्रयास किए जाने चाहिए।
- जहाँ तक संभव हो, सरकारी और निजी स्कूलों में कक्षा 5 तक बच्चों की घर की भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

4

दो शिक्षक - दो तरीके

श्री जीवनलाल
कक्षा 2

- वागड़ी बोलने वाले बच्चे
- मेहनती, जोशीले
- स्कूल की भाषा का शुद्ध प्रयोग

श्रीमती महिमा
कक्षा 1

- वागड़ी बोलने वाले बच्चे
- सहज, मिलनसार
- बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा का मिलाजुला प्रयोग

5

आइए, इनकी कक्षाओं पर एक नजर डालें!

<u>जीवनलाल जी की कक्षा</u> (कक्षा 1 के बच्चों के साथ) -

जीवनलाल जी डूंगरपुर जिले के दूरस्थ क्षेत्र में स्थित एक स्कूल में पढ़ाते हैं। यहाँ आसपास के समुदाय में रोज़मर्रा की जीवनचर्या में वागड़ी भाषा बोलते हैं। बच्चे जब स्कूल में पहली कक्षा में प्रवेश करते हैं तो बच्चों को हिंदी भाषा का एक्सपोजर नहीं होता है या बहुत कम होता है | इन बच्चों को घर पर भी हिंदी भाषा में किसी तरह की प्रिंट सामग्री उपलब्ध नहीं होती है।

जीवनलाल जी कक्षा में अलग-अलग तरह की शिक्षण सामग्री और विभिन्न गतिविधियों का इस्तेमाल करते हुए शिक्षण कराते हैं लेकिन इनके सामने समस्या यह है कि बहुत मेहनत करने के बाद भी इनकी कक्षा में बच्चों की भागीदारी बहुत कम होती है। आकलन में बच्चों का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा नहीं है। जीवनलाल जी का मानना है कि कक्षा में बच्चों के घर की भाषा का बिलकुल भी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे हिंदी नहीं सीख पाएँगे और पीछे छूट जाएँगे। उनकी शिक्षण प्रक्रिया इसी मान्यता के इर्द-गिर्द घूमती है। इनकी कक्षा में बातचीत का एक उदाहरण देखते हैं –

शिक्षक (जीवनलाल जी) – पुस्तक से चित्र दिखाते हुए पूछते हैं, बताओ यह क्या है ?

बच्चे - **सर आ एक रूकड़ु है** (सर यह एक पेड़ है)

शिक्षक (जीवनलाल जी) - यह **रूकड़ु क्या होता है कोई और बताओ**।

एक बच्चा - **सर आ एक रूकड़ुस है** (सर यह तो एक पेड़ ही है)

दूसरा बच्चा - **सर , आ तो कैरी है** (सर यह तो आम है)

एक अन्य बच्चा - **सर , आ पाकी कैरीस तो है** (सर, पका हुआ आम ही तो है)

शिक्षक (जीवनलाल जी) – फिर वही बात, हिंदी में बताओ यह क्या है ?

बच्चे – चुप हो जाते हैं और आपस में फुसफुसाते हैं **मने पतु है पण बुलवा थकी बीक लागे है** (मुझे मालूम तो है लेकिन बोलने से डर लग रहा है)

दूसरा बच्चा – **मने बी पतु है** (मुझे भी पता है)

6

आइए, इनकी कक्षाओं पर एक नजर डालें!

महिमा जी की कक्षा (कक्षा 1 के बच्चों के साथ)

आइए, अब उदाहरण के लिए एक और कक्षा को देखते हैं। इसमें शिक्षिका महिमा जी हैं। यह भी जीवनलाल जी की तरह डूंगरपुर जिले के दूरस्थ क्षेत्र में स्थित एक स्कूल में पढ़ाती हैं जहाँ आसपास के समुदाय में रोज़मर्रा की जीवनचर्या में वागड़ी भाषा बोलते हैं। बच्चे जब स्कूल में पहली कक्षा में प्रवेश करते हैं तो बच्चों को हिंदी भाषा का एक्सपोजर नहीं होता है या बहुत कम होता है। इन बच्चों के घर पर भी हिंदी भाषा में किसी तरह की प्रिंट सामग्री उपलब्ध नहीं होती है। इनकी कक्षा में बातचीत का एक उदाहरण देखते हैं –

शिक्षिका (महिमा जी) – एक पुस्तक से चित्र दिखाते हुए बच्चों से पूछती है, अच्छा बताओ, इस चित्र में आपको क्या दिखाई दे रहा है

बच्चे – **खली** (गिलहरी)

दूसरा बच्चा – **वान्दरू नै रूकडू** (बन्दर और पेड़)

तीसरा बच्चा – **रूकड़ा माते वान्दरू हुतू है** (पेड़ पर बन्दर सो रहा है)

शिक्षिका (महिमा जी) - **आ खली हुं करी रई है ?** (अच्छा तो यह गिलहरी क्या कर रही है)

एक बच्चा - **खली वान्दरा ना पूंसडा ने हाईने खिंसी रई है** (गिलहरी बन्दर की पूँछ को पकड़कर खींच रही है)

शिक्षिका (महिमा जी) **एम करवा थकी वान्दरू हुं करेगा ?** (अच्छा तो ऐसा करने पर बन्दर क्या करेगा)

एक बच्ची – **एने बो करेगा के एम नके कर** (उसे डांटेगा कि ऐसा मत करो)

दूसरी बच्ची – **वान्दरू एने माते गुस्सो करेगा** (उस पर बन्दर गुस्सा करेगा)

तीसरा बच्चा – **वान्दरू एने बो करेगा** (बन्दर उसको डांटेगा)

शिक्षिका – **वान्दरू एने माते कैम खिजायेगा** (बन्दर उस पर क्यों नाराज होगा)

एक बच्चा - **कैमके एने पूंसडा ने खेंसवा थकी एने दुकतु होगा अटले , वान्दरू एने थकी खिजायी जाएगा** (क्योंकि उसकी पूँछ को पकड़कर खींचने से उसे दर्द हो रहा है, इसलिए बन्दर उस पर नाराज़ होगा)| दूसरा बच्चा - **ना वान्दरू कोई नीं करेगा, वान्दरू हुतू रेगा, नै खली सानी-मनी रुकडा माते सडी जाहे** (नहीं बन्दर कुछ नहीं करेगा, बन्दर सोता रहेगा और गिलहरी चुपचाप पेड़ पर चढ़ जाएगी)

शिक्षिका - **वांदरा नूं पुंसडू** यानि बन्दर की पूँछ कितनी लम्बी रही होगी कि जमीन तक लटक रही थी| बच्चों के अलग-अलग तरह के जवाब आते हैं - **दुरा अटलु लाम्बू , अंगास अटलु लाम्बू, वांहडा अटलु लाम्बू, वडला अटलु लाम्बू** (तार जितना लम्बा, रस्सी जितना लम्बा, डोर जितना लम्बा, आसमान जितना लम्बा, बांस जितना लम्बा, बरगद जितना लम्बा)

शिक्षिका– अच्छा, **वांदरू रूकड़ा माते** (वागडी) यानि बन्दर पेड़ पर सो रहा है तो देखो बन्दर आराम से पेड़ पर लेटा आराम से लेता हुआ है तुम भी करके दिखाओ, कैसे लेटा है बन्दर?

बच्चे तरह-तरह की मुद्राओं में लेटकर दिखाने लगते हैं, कोई पूरी तरह लेट जाता है तो बन्दर की तरह मुद्रा बनाता है तो कोई अधलेटा हो जाता है|

7

मुख्य अंतर

कोई भागीदारी नहीं v/s सक्रिय भागीदारी — 1

डरे सहमे v/s आत्मविश्वास से भरे बच्चे — 2

सोचने-समझने के सीमित अवसर v/s बेहतर समझ और उच्च स्तरीय चिंतन — 3

शिक्षक केंद्रित v/s बाल केंद्रित — 4

8

एक परिचित भाषा के माध्यम से सीखना बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि...

बच्चों की बेहतर भागीदारी; बाल केंद्रित शिक्षा

बेहतर समझ और उच्च स्तरीय चिंतन

अन्य भाषाएँ सीखने में सहायक

सभी विषयों में बेहतर प्रदर्शन

बच्चों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना

9

- **FLN मिशन** तब तक सफल नहीं हो सकता है जब तक कि प्रारंभ से ही **'एक समझ की भाषा'** को शामिल नहीं किया जाता है।
- पढ़ना और लिखना सीखना केवल लिपि को डिकोड करना ही नहीं है। **अर्थ निर्माण, निष्कर्ष निकालना** आदि।

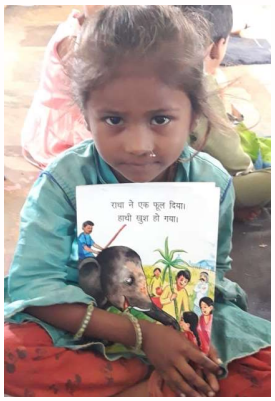

पढ़कर समझना = **शब्द पहचान** (वर्ण, मात्रा, जोड़ना और शब्द पढ़ना) X **भाषा की समझ** (शब्दावली, तर्क कर पाना, पूर्व ज्ञान)

10

परिचित भाषा का सेतु

परिचित भाषा ☺

अपरिचित भाषा ☹

बुनियादी वर्षों में घर की भाषा या परिचित भाषा का सेतु बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है!

11

आम धारणा

- **घर की भाषा** के **अधिक** या **लंबे समय तक** प्रयोग करने से **राज्य की भाषा / अंग्रेजी सीखने के लिए समय नहीं बचेगा।**
- **राज्य की भाषा / अंग्रेजी** का अकेला प्रयोग जितना **जल्दी** हो सके, **शुरू** कर देना चाहिए!

12

ध्यान दें - एक भाषा की मजबूत बुनियाद अन्य भाषाओं को सीखने में मदद करती है!

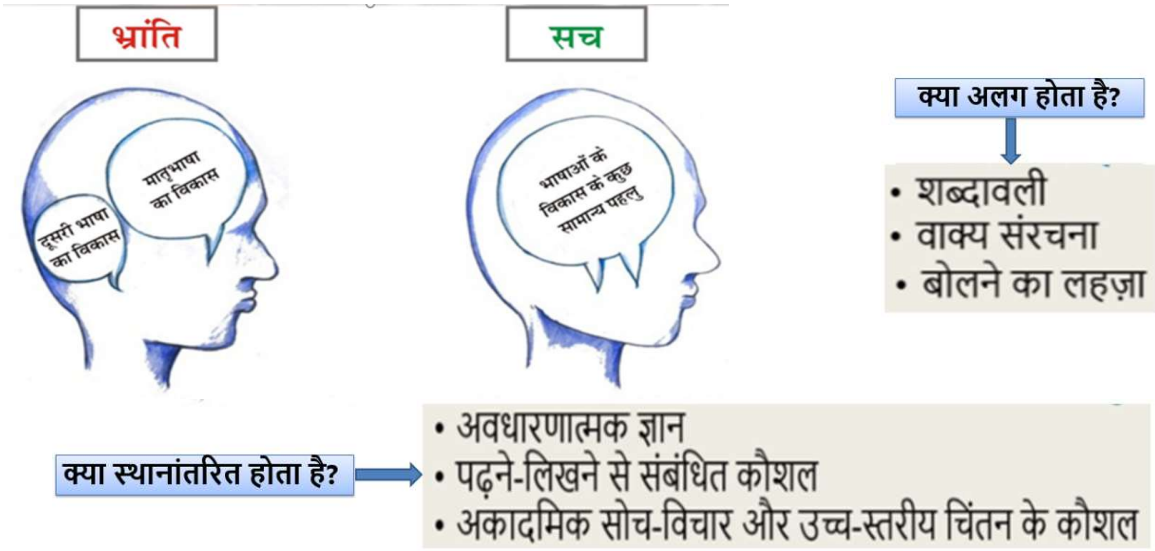

13

भारत में भाषाएँ और शिक्षण का माध्यम

हमारे देश में शिक्षण के माध्यम के रूप में कितनी भाषाएँ इस्तेमाल की जाती हैं?

36

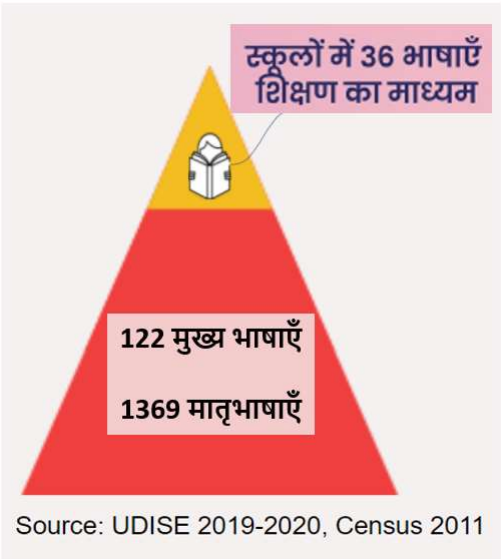

झारखंड

- 18 मुख्य भाषाएँ
- हिन्दी - शिक्षण का माध्यम
- हिन्दी - 4% बच्चों के घर की भाषा

14

किन बच्चों को सीखने में सबसे अधिक समस्या आती है?

भारत के कितने प्रतिशत बच्चे एक अपरिचित शिक्षण की भाषा के कारण सीखने में कठिनाईयों का सामना करते हैं?

35%

केवल आदिवासी बच्चे नहीं !

1. सुदूर आदिवासी इलाकों के बच्चे
2. स्कूल की मानक भाषा से अलग स्थानीय भाषा बोलने वाले बच्चे
3. अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे
4. प्रवासी/मौसमी प्रवासी परिवारों के बच्चे
5. नर्सरी/कक्षा 1 से अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चे

15

बहुभाषिकता: भाषाओं का असमान दर्जा

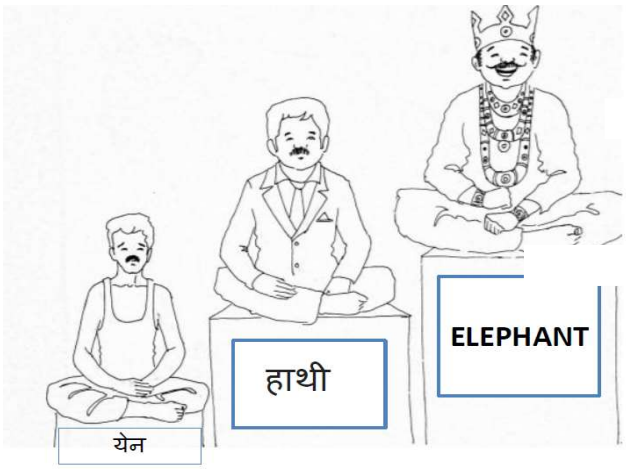

16

कक्षाओं में अलग-अलग भाषाई परिस्थितियाँ

- *बोलने का तरीका थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बदलना*
- *भाषाओं के विविध रूप*

- सभी बच्चों के घर की एक भाषा; स्कूल की भाषा की सीमित समझ
- एक ही कक्षा में कई घर की भाषाएँ!
- शिक्षकों की बच्चों के घर की भाषा की समझ?

17

विविध भाषाई परिस्थितियाँ: भाषाई सर्वेक्षण की आवश्यकता

परिस्थिति 1:
लगभग सभी बच्चों के पास स्कूली भाषा की अच्छी समझ

परिस्थिति 2:
- ज़्यादातर बच्चों के पास स्कूली भाषा की बहुत सीमित समझ
- लगभग सभी बच्चों की घर की एक ही भाषा
- अध्यापक को बच्चों की भाषा आती हो

परिस्थिति 3:
- ज़्यादातर बच्चों के पास स्कूली भाषा की बहुत सीमित समझ
- लगभग सभी बच्चों की घर की एक ही भाषा
- अध्यापक को बच्चों की भाषा **नहीं** आती हो

परिस्थिति 4:
- ज़्यादातर बच्चों के पास स्कूली भाषा की बहुत सीमित समझ
- बच्चे दो या दो से अधिक भाषाई समुदायों से आते हों
- अध्यापक इनमें से किसी एक भाषा को बोलते-समझते हों

18

आम धारणा

- इतने बड़े देश में, जहाँ **भाषाई विविधता और जटिलताएँ** बहुत अधिक हैं, इतनी सारी **मातृभाषाओं को शिक्षण का माध्यम बनाना बेहद चुनौतीपूर्ण साबित होगा।**

- इसलिए इस दिशा में चाह कर भी कुछ नहीं किया जा सकता !

19

बच्चों के घर की भाषा का इस्तेमाल मौखिक रूप से किया जा सकता है!

- **बच्चों के घर की भाषा – मौखिक स्तर पर लंबे समय तक व्यापक और रणनीतिक इस्तेमाल**
- **स्कूल की भाषा - शिक्षण का औपचारिक माध्यम**

20

रणनीति-1

आरंभ में सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।

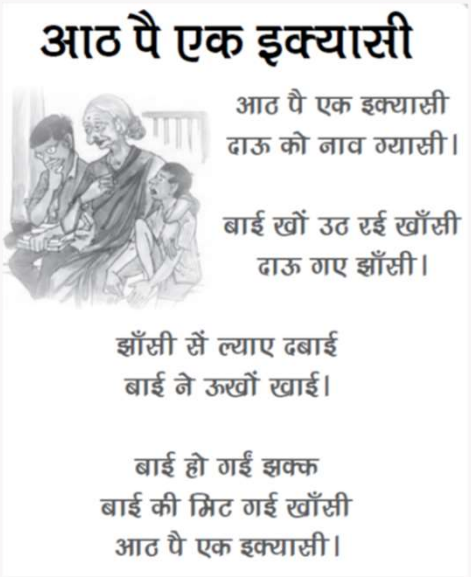

बुंदेली समुदाय की कविता का पोस्टर

21

वागड़ी कविता

छत्तीसगढ़ी कहानी का भाग

हल्बी कविता

22

रणनीति-2

बच्चों के स्तर के अनुरूप घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित, सोचा-समझा और रणनीतिक इस्तेमाल करें।

- घर की भाषा - नई या कठिन अवधारणाएँ, उच्च स्तरीय सोच और अभिव्यक्ति
- स्कूल की भाषा - सामान्य चर्चा, परिचित विषयवस्तु, सरल अवधारणाएँ

23

रणनीति-3

घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले इस्तेमाल को प्रोत्साहित करें।

- बच्चे- घर की भाषा; शिक्षक- स्कूल की भाषा या मिलीजुली भाषा
- बच्चों की समझ और स्तर के अनुसार शिक्षक के द्वारा घर और स्कूल की भाषा के प्रयोग को एडजस्ट करना
- बच्चों के द्वारा बेहतर अभिव्यक्ति और संवाद हेतु भाषाओं का मिला-जुला इस्तेमाल

24

आइए, एक कक्षा देखें जहाँ भाषाओं का मिला-जुला इस्तेमाल सहज रूप से किया जा रहा है!

श्री द्रोण साहू
शिक्षक, छत्तीसगढ़

25

विचार करें!

इस कक्षा की किन बातों ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया?

बच्चों और शिक्षक के बीच आत्मीयता और जुड़ाव

सक्रिय, आत्मविश्वास से परिपूर्ण बच्चे

अर्थ-निर्माण, उच्च-स्तरीय चिंतन और अभिव्यक्ति

26

रणनीति-4

पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा की मदद लें।

- घर की भाषा के परिचित शब्दों की मदद से डिकोडिंग सिखाएँ।

/स/ - **सपेरा** OR **सकली**

- मिली-जुली भाषा में लिखित अभिव्यक्ति को स्वीकार करें।

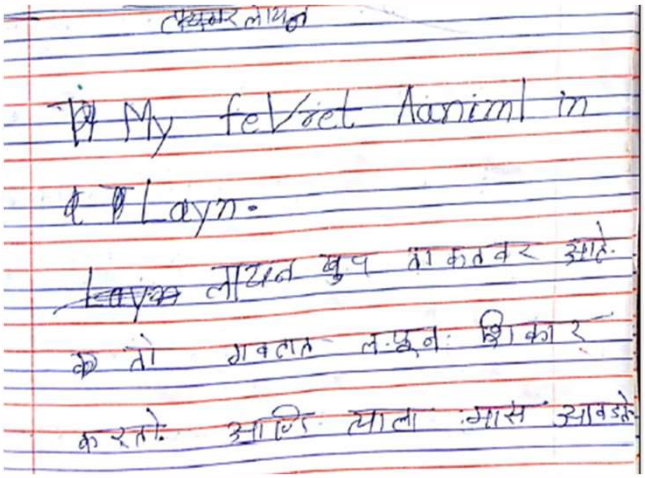

बच्ची द्वारा लिखित अभिव्यक्ति के लिए मराठी, हिन्दी और अंग्रेजी का मिलाजुला उपयोग

27

रणनीति-5

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में (सिर्फ़ बच्चों की भाषा ही नहीं) बच्चों के पूर्वज्ञान, संस्कृति और संदर्भों को (भी) शामिल करें।

- **चर्चाएँ:** स्थानीय त्योहार, रीत-रिवाज, फसलें, पशु-पक्षी, खाद्य पदार्थ, रहन-सहन, रोज़गार पर चर्चा
- **शिक्षण सामग्री और उनका प्रयोग:** किस्से-कहानियाँ, कविताएँ, लोक कथाएँ, गीत, पहेलियाँ
- **पाठ्यचर्या की विषयवस्तु और अवधारणाओं से संबंध** – ज्ञात से अज्ञात

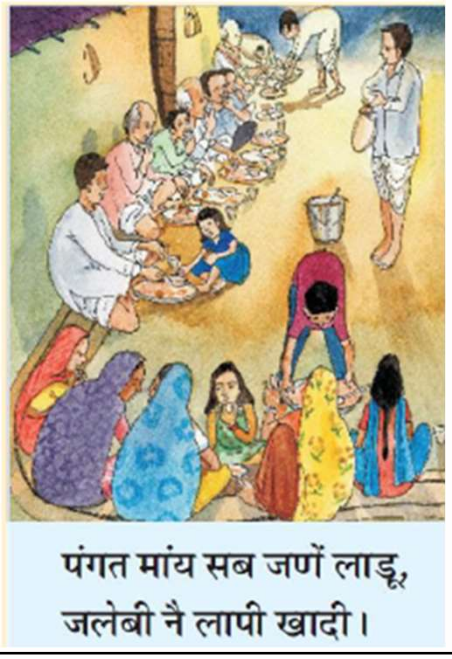

28

बच्चों की भाषा न जानने की स्थिति में क्या करना चाहिए?

- बच्चों की बातें ध्यानपूर्वक सुनें।
- L1 के सामान्य शब्द और वाक्यांश सीखें।
- शिक्षण के लिए L1 और L2 का मिलाजुला प्रयोग करें।
- बड़े बच्चों और स्टाफ के अन्य सदस्यों की मदद लें।
- घर की भाषा सीखने के लिए शब्दकोष बनाएँ।
- समुदाय से बातचीत करें।

श्रीमती पुष्पा शुक्ला

कक्षा –1

शासकीय प्राथमिक शाला

गरियाबंद, छत्तीसगढ़

29

बहुभाषी शिक्षण - सीखने सिखाने की प्रक्रिया में एक से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल

1. बच्चों के घर की भाषाओं और सांस्कृतिक ज्ञान को महत्व देना; सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में इस्तेमाल करना

2. सीखने-सिखाने के लिए भाषाओं का सहज और मिलाजुला इस्तेमाल करना

3. अन्य भाषाएँ सिखाने के लिए बच्चों के घर की भाषा की मदद लेना

4. सभी विषयों के लिए बहुभाषी शिक्षण का उपयोग करना

बहुभाषी शिक्षण = घर की भाषा + राज्य की भाषा + अंग्रेजी

30

किसी अपरिचित भाषा (L2) को सिखाने के कुछ सरल और प्रभावी तरीके

1. मौखिक गतिविधियों से शुरुआत
2. समग्र माहौल – सुनने, देखने/पढ़ने और इस्तेमाल करने के बहुत से रोचक अवसर
3. बच्चों के समझने योग्य और स्तर के अनुरूप
4. भयमुक्त वातावरण
5. शब्दावली विकास

31

Key Messages

32

निष्कर्ष

सक्रिय और बाल-केंद्रित कक्षाओं के लिए बच्चों के घर की भाषा

बहुभाषी शिक्षण - सभी के लिए आवश्यक

बेहतर समझ और अभिव्यक्ति के लिए मिलीजुली भाषा

FLN मिशन की सफलता के लिए बच्चों के घर की भाषा

33

34

धन्यवाद!

35